सेवा

दया शर्मा

सुबह उठते ही बेहद दुखद खबर सुनने को मिली कि पड़ोस में रहने वाले प्रकाश अंकल जी नहीं रहे। घरवालों को भी पता नहीं चला कि कब सोते हुए उनकी हृदय गति रुक गई।

अभी कल की ही तो बात है जब मैं अपने आफिस जाने के लिए बाहर निकल रही थी तो अंकल बरामदे में खड़े थे । तबीयत तो उनकी काफी दिनों से खराब ही चल रही थी फिर भी बरामदे आकर अक्सर टहलते और वहाँ से गुजरने वालों का हालचाल भी पूछते । अंकल मुझे देखकर बोले, " अनु बेटा ऑफिस से लौटते वक्त मेरे लिए आधा किलो सेव लेते आना बहुत दिनों से खाने की इच्छा हो रही है "उन्होंने मुझे पैसे देते हुए कहा। " नहीं अंकल आप पैसे रखिये मैं आपके लिए सेव लेती आऊंगी। " कह कर मैंने अंकल को पैसे लौटा दिए ।

ऑफिस से लौटने के बाद मैंने माँ से कहा कि वे मेरे लिए खाना निकालें तब तक मैं अंकल को सेव दे कर आती हूँ । मैं एक किलो सेव लेकर उनको देने के लिए गई। घर के अंदर घुसते ही सामने उनकी बहु मिल गई हाथ में बैग देखते ही बोली, " अनु ये क्या लेकर आई हो ?" "भाभी अंकल के लिए सेव लेकर आई हूँ " मैंने जवाब दिया ।"इन्होनें ने ही तुम्हें लाने के लिए कहा होगा " फिर ससुर की तरफ देख कर बोली "पड़े पड़े खाने की आदत जो हो गई है अपने स्वास्थ्य का तो ख्याल रखते नही ये भी नही जानते कि इनके पीछे सबको कितना कष्ट उठाना पड़ता है। जब हम इतनी मंहगी दवाईयां आपके लिए ला सकते हैं तो सेव के लिए भी बोला होता दूसरों के सामने हमें शर्मिन्दा करने की क्या जरूरत है। सुनो अनु फिर कभी ये कुछ लाने के लिए बोलें तो सीधा मुझे कहना। " " नही भाभी आप ग़लत समझ रही हैं । ये सेव तो मैं अपनी खुशी से अंकल के लिए लाई थी" यह कहकर मैंने अंकल को देखा जो भीगी आँखें लिए दूसरी तरफ देख रहे थे ।यह कह कर मैं तुरंत वहाँ से निकल आई । घर आकर जब माँ को सारी बात बताई माँ ने मुझे ही फटकार लगाते हुए कहा " जब तुम्हें नीरा (भाभी) की आदत का पता है तब क्या जरूरत थी उसके सामने देने की ।" बात भी सही थी इस बात का तो मुझे ख्याल ही नही रहा। मन बहुत खराब हो चुका था। माँ से भूख नही है कह कर खाना भी हटवा दिया। सुबह जब से इस दुखद समाचार को सुना है तब से कल की घटना दिमाग में घूम रही है । कुछ समय बाद जब मैं वहाँ पहुँची तो नीरा भाभी हर आने जाने वालों को घड़ियाली आँसू बहाते हुए कह रही थी " हमने तो पिताजी की सेवा व उनके अच्छे से अच्छे इलाज में कोई कमी नही रखी फिर न जाने ऐसा क्या हो गया । "फिर नीरा भाभी मेरी तरफ देखते हुए बोली, "अनु , तुम तो खुद देखती थी न हमलोग पिताजी का कितना ख्याल रखा करते थे ।" अब मैं क्या कहती ।घर के दूसरे कमरे में नजर पड़ी तो पाया कि वहाँ नीरज भैया हाथों से मुँह ढ़क कर सुबक रहे थे और दोनों बेटे उनको चुप करा रहे थे ।

शिलांग

ISSN:2583-8849